315hi18

18

आधुनिक भारत में सामाजिक परिवर्तन

18 से 19वीं शताब्दी के दौरान भारतीय उपमहाद्वीप में कई महत्त्वपूर्ण सामाजिक बदलाव आए। ब्रिटिश शासन की शुरुआत, सामाजिक तथा धार्मिक सुधार की बढ़ती इच्छा, मध्य वर्ग का उदय, ब्रिटिश तथा भारतीय भाषाओं में समाचार पत्रों की प्रगति, देश के भौतिक ढांचे तथा अर्द्ध–राजनीतिक एकीकरण इस परिवर्तन के लिए उत्तरदायी थे। मुगल शासन की समाप्ति के पश्चात् 18वीं शताब्दी में कई क्षेत्रीय राज्यों का उदय हुआ। इन कमियों के फलस्वरूप ब्रिटिश शासन का क्रमशः विस्तार हुआ, जिसने पूर्णतः असामान्य शासन व्यवस्था को जन्म दिया तथा जिसके परिणाम दीर्घकालिक रहे।

उद्देश्य

इस पाठ का अध्ययन करने के पश्चात आपः

- भारत में ब्रिटिश शासकों की सांस्कृतिक नीतियों की विस्तृत रुपरेखा से परिचित हो सकेंगे;
- ओरियंटालिस्ट और एंगली राज्य में संघर्ष की प्रकृति की समीक्ष कर सकेंगे;
- भारत में शिक्षित वर्ग पर ब्रिटिश शासन का प्रभाव बता सकेंगे;
- सामाजिक और धार्मिक जीवन की बुराइयों का उल्लेख कर सकेंगे;
- आधुनिक भारतीय बुद्धिजीवी वर्ग के उदय की पृष्ठभूमि का वर्णन कर सकेंगे;
- उनके द्वारा किए गए सुधार आंदोलनों तथा उठाए गए मुद्दों पर चर्चा कर सकेंगे;
- भारत में पश्चिमी शिक्षा की प्रगति के चरणों की पहचान कर सकेंगे और
- भारत में पत्रकारिता के विकास के विभिन्न चरणों के बारे में जान सकेंगे।

18.1 भारत में ब्रिटिश सांस्कृतिक नीतियाँ

ब्रिटिश शासन के आरंभिक काल में भारत में कई उपनिवेशवादी विचारधाराएँ सामानान्तर रूप से विद्यमान थीं। वहीं इग्लैंड में शासन का सफल संचालन करने के सर्वाधिक उपयुक्त तरीकों के बारे में भिन्न–भिन्न विचार धाराएँ थी। नीतीयाँ सामान्यतः यूरोप और

आपकी टिप्पणियाँ

विशेषतः इंग्लैंड की विशेष विचार धाराओं की लेकप्रयता पर आधारित थीं। साथ ही वे भारत–यूरोप में उच्च पदस्थ ब्रिटिश पदाधिकारियों के पूर्वाग्रहों या विचारों पर भी आधारित थीं। पलासी (1757) तथा बक्सर (1764) के युद्धों के पश्चात् जीते हुए राज्यों पर शासन करने के लिए ब्रिटिश शासकों को खासी मशक्कत करनी पड़ी। यहाँ यह देखना बहुत रोचक होगा कि किस प्रकार भिन्न विचारधाराएँ भिन्न – भिन्न समय में केंद्र में एक शक्ति बन गईं।

18.1.1 प्राच्यविद्

भारत में ब्रिटिश प्रशासकों की पहली पीढ़ी, जैसे वारेन हेस्टिंग्स, विलियम जोन्स, जोनाथन डंकन ने इस विचार को लोकप्रिय बनाया कि भारत का एक स्वर्णिम अतीत था, जो धीरे–धीरे मंद होता गया। वे विद्वान तथा प्रशासक प्राच्यविद् कहलाए। वे भारतीय भाषाओं एवं परम्पराओं को जानने तथा फैलाने के इच्छुक थे। उनके अनुसार भारत को समझने से उनके लिए यहाँ पर शासन करना बेहतर हो सकता था। उस तर्क को आगे बढ़ाते हुए हम कह सकते हैं कि प्राच्यविदों ने भारत के अतीत की इस प्रकार व्याख्या की कि भारत में औपनिवेशिक शासन जरूरी था। उनके प्रयासों से कई संस्थान भी अस्तित्व में आए, जैसे वारेन हेस्टिंग्स द्वारा स्थापित कलकत्ता मदरसा (1781) विलियम जोन्स द्वारा स्थापित एशियाटिक सोसायटी ऑफ बंगाल (1784) तथा (1794) जौनाथन डंकन द्वारा स्थापित बनारस का संस्कृत महाविद्यालय ।

विलियम जोन्स ने भारतीय प्राचीन भाषाएँ सीखीं तथा संस्कृत एंव प्राचीन पश्चिमी भाषाओं के बीच कई महत्त्वपूर्ण भाषिक समानताएँ पाईं जैसे ग्रीक एवं लैटिन। तकरीबन 50 सालों के लिए एशियाटिक सोयायटी ज्ञान का तथा संस्कृत के महत्त्वपूर्ण ग्रंथों के अनुवाद का एक दुर्लभ केंद्र बना रहा। 'एशियाटिक रिसर्चेज' के नाम से एक महत्त्वपूर्ण पत्रिका भी प्रकाशित होती थी। वारेन हेस्टिंग्स का विचार था कि हिंदुओं के नियम–कानून सदियों से अपरिवर्तनीय रहे हैं। इसलिए यदि उन्हें देश में अपनी सत्ता स्थापित करनी है तो उन्हें संस्कृत तथा इन नियमों को समझना ही होगा। हिन्दुओं के रीति–रिवाजों को दर्शाते हुए एन. बी. हैलहेड ने 1776 में 'ए कोड ऑफ जेन टू लॉज' लिखी थी।

ब्रिटिश प्रशासकों को भारतीय सभ्यता तथा संस्कृति से परिचित कराने की मांग दिनों दिन जोर पकड़ रही थी। वेलेस्ली द्वारा 1801 में फोर्ट विलियम कॉलेज की स्थापना उन युवा ब्रिटिशों के लिए की गई जिनकी भारत में प्रशासनिक सेवा में नियुक्ति होती थी। यह कॉलेज भारत के विषय में ज्ञान देने वाला प्रमुख केन्द्र बन गया था। इसके कई विभाग भारतीय भाषाओं और साहित्य पर अनुसंधान के लिए समर्पित थे।

आर्थिक तथा प्रशासकीय नीतियों पर विचारों का प्रभाव

विचारों का प्रभाव आर्थिक तथा प्रशासकीय नीतियों पर स्पष्टतः दिखाई देता है। 1786 में गवर्नर जनरल का पद संभालने वाला लॉर्ड कॉर्नवालिस 18वीं शताब्दी की विग राजनीतिक विचारधारा से काफी प्रभावित था। विग दर्शन में सरकार के सभी अंग अर्थात् कार्यपालिका, विधायिका तथा न्यायपालिका पृथक होने चाहिएँ। यह सभी अंगों पर नियंत्रण रखेगा ताकि कोई भी अंग मनमाना व्यवहार न कर सके। 18वीं शताब्दी में इंग्लैंड के दो प्रमुख राजनीतिक विचारक, फिलिप फ्रांसिस तथा एडमुंड बर्क थे। बर्क ने

जोर देकर कहा था कि स्थानीय नागरिकों की समृद्धि सुनिश्चित कर देनी चाहिए, इससे पहले कि उनसे फायदा उठाया जाए। उसके मित्र तथा कलकत्ता की सर्वोच्च परिषद के एक सदस्य फिलिप फ्रांसिस ने बंगाल की प्रशासनिक संपत्ति के सिलसिले में एक व्यापक योजना बनाई थी। इस योजना का प्रभाव 1793 में लार्ड कार्नवालिस की स्थाई बंदोबस्त की नीति पर देखा जा सकता है, जो बंगाल बिहार तथा उड़ीसा में लागू की गई थी। कॉर्नवालिस बंगाल प्रशासन में विग नीति की जबरदस्त नींव डालने में सफल रहा। स्थाई बंदोबस्त के विषय में बहुत कुछ आप ब्रिटिश काल की आर्थिक व्यवस्था के अध्ययन के दौरान पढ़ेंगे।

इंग्लैंड पहला ऐसा देश था जिसने औद्योगिक क्रांति का अनुभव किया तथा जिसके परिणामस्वरूप वहाँ पर बने बनाए उत्पादों का ढेर लग गया था। अंग्रेज पूंजीपति अब ब्रिटिश उपनिवेशों में मुक्त व्यापार के लिए जोर डालने लगे थे। उन्होंने ब्रिटिश सरकार पर भारत में कंपनी के एकाधिकार को समाप्त करने की मांग की। मुक्त व्यापार की पैरवी करने वालों ने भारत के नीति निर्धारकों को भी काफी हद तक प्रभावित किया था। अंततः सन् 1813 में भारत पर कंपनी की पकड़ कम करने के लिए चार्टर एक्ट लाया गया। साथ ही, लिबरल तथा यूटिलिटेरियनों ने भारत के परिप्रेक्ष्य में नीति बनाकर अपनी स्थिति सुदृढ़ की।

पाठगत प्रश्न 18.1

1. प्राच्यविदों द्वारा स्थापित प्रमुख संस्थानों के नाम लिखिए।

2. भारत में शिक्षा को प्रोत्साहित करने के लिए एशियाटिक सोसायटी की भूमिका का महत्त्व बताइए।

3. फोर्ट विलियम कॉलेज की स्थापना किसने की?

4. औद्योगिक क्रांति सबसे पहले किस देश में हुई?

5. भारत के साथ व्यापार पर कंपनी के एकाधिकार को किस कानून (Act) ने समाप्त किया?

18.2 सामाजिक-धार्मिक सुधार

19वीं शताब्दी की सबसे प्रमुख विशेषता सामाजिक तथा धार्मिक सुधारों की इचछा रही, ताकि जाति तथा सम्प्रदायों के बंधन को समाप्त किया जा सके। भारत में सामाजिक तथा धार्मिक सुधारों की लंबी परंपरा रही है। प्राचीन काल में सुधार की यह प्रवृत्ति उपनिषदों, बौद्ध, जैन, वज्रयान तथा तंत्रवाद में दिखलाई पड़ती है। मध्यकाल में भक्ति संतों तथा

आपकी टिप्पणियाँ

सूफी संतों की लोकप्रियता प्रसिद्ध है। ब्रिटिश प्रशासकों की प्रथम पीढ़ी द्वारा भारत के अतीत के विषय में जानकारी प्राप्त करने के प्रयासो ने शिक्षित वर्ग को अपने अस्तित्व को जानने की चेतना जगाने में मदद की। आरंभिक सुधार उपयुक्त जवाबों की तलाश में किए गए। किंतु आधुनिकीकरण का स्वरूप पश्चिम प्रभाव में तय नहीं किया गया था क्योंकि सुधार के कारण भारत के अतीत से ही खोजे जाने थे।

बंगाल में पुनर्जागरण

बंगाल से प्रारंभ हुए सुधार अंदोलनों को अक्सर बंगाल पुनर्जागरण कह कर संबोधित किया जाता है। बंकिम चंद्र चटर्जी तथा बिपिन चंद्र पाल ने 19वीं शताब्दी में बंगाल में हुए सुधारों को पुनर्जागरण काल की संज्ञा दी है। यूरोप में हुए जागरण से बंगाल की विकासात्मक गतिविधियों की हालांकि तुलना नहीं की जा सकती क्योंकि दोनों के सेदर्भ तथा ढंग सर्वथा पृथक थे। हालांकि जब हम बंगाल के पुनर्जागरण की बात करते हैं तो इस विकास को तीन चरणों में बाँट सकते हैं–

ऐतिहासिक पुर्नखोज, भाषाई तथा साहित्यिक आधुनिकीकरण तथा सामाजिक–धार्मिक सुधार।

ब्रह्म समाज

बंगाल के राजा राम मोहन राय आधुनिक युग के सर्वाधिक विख्यात सुधारक थे। जन साधारण के बीच राजनीतिक मुद्दों पर बहस की शुरुआत का श्रेय उन्हीं को जाता है।

चित्र 18.1 राजा राम मोहन राय

उनके द्वारा स्थापित आत्मीय सभा (1814) ने अपने समय के महत्त्वपूर्ण सामाजिक तथा राजनीतिक मुद्दों पर बहस आरंभ की। सन् 1828 में इसका वृहद् संस्करण ब्रहम समाज के नाम से प्रसिद्ध हुआ। जल्द ही उन्होंने समाज के ज्वलंत मुद्दों पर काम करना प्रारंभ कर दिया जिनमे समाज में उन दिनों प्रचलित अमानवीय सती प्रथा थी। उन्होंने तत्कालीन गवर्नर जनरल विलियम बेंटिंक का सहयोग हासिल किया तथा इस प्रथा के विरुद्ध लिखा। सन् 1829 में सती प्रथा को कानूनी तौर पर प्रतिबंधित कर दिया। उन्होंने महिलाओं के साथ होने वाले हर प्रकार के अन्याय का विरोध किया। रॉय आधुनिक शिक्षा के भी हिमायती थे। उन्होंने वेदांत कॉलेज (1825) के साथ–साथ ब्रिटिश स्कूल भी खोले। वे एकेश्वरवादी थे। उन्होंने मूर्तिपूजा का विरोध किया तथा उपनिषदों को सच्चे हिन्दूवाद का आधार माना। उन्होंने हिन्दू धर्म को सभी बुराइयों से मुक्त कर शुद्ध करना चाहा। वं ब्रिटिश शिक्षा तथा पश्चिमी ज्ञान के विरोधी नहीं थे।

1833 ई. में राय की मृत्यु के पश्चात् ब्रह्म समाज विघटित होने लगा। 1842 ई. में उसका संगठन तथा कलकत्ता से बाहर विस्तार श्री देवेन्द्रनाथ टैगोर के नेतृत्व में हुआ। श्री टैगोर ने 'ब्रहमो–प्रण' की रचना की जिसमें सदस्यों के कार्यों का विवरण प्रस्तुत किया गया।

केशव चन्द्र सेन (1838–1884) 'समाज' में 1858 में शामिल हुए तथा वे एक वाक चतुर तथा किसी भी बात को मनवाने में समर्थ थे । उन्होंने समाज की गतिविधियों को बंगाल के बाहर उत्तर प्रदेश, पंजाब मद्रास तथा बम्बई तक फैलाया। उन्होंने जाति व्यवस्था पर हमला कर, महिला अधिकारों की बात की। विधवा पुर्नर्विवाह को प्रोत्साहित कर तथा ब्रहम धर्म सुधारकों के मध्य जाति व्यवस्था (जो पहले केवल ब्राहमणों के लिए ही था) के मुद्दे को उठाकर ब्रह्म समाज को और सुधारवादी रूप दिया। उन्होंने धर्म के सार्वभौमिकीकरण पर जोर दिया। उनके सुधारवाद ने उन्हें देवेन्द्रनाथ के विरोध में खड़ा कर दिया। सन् 1866 में समाज आधिकारिक तौर पर 'आदि ब्रह्म समाज' (देवेन्द्रनाथ के नेतृत्व में) तथा 'ब्रह्म समाज ऑफ इंडिया' (केशव चन्द्र के नेतृत्व में) में विभाजित हो गया।

ईश्वरचन्द्र विद्यासागर

एक अन्य बंगाली सुधारक जिन्होंने महिलाओं के मुद्दों पर अपनी आवाज उठाई वे थे ईश्वरचन्द्र विद्यासागर। उन्होंने कन्याओं की शिक्षा के विस्तार पर भी कार्य किया क्योंकि

चित्र 18.2 ईश्वरचन्द्र विद्यासागर

आपकी टिप्पणियाँ

उनके अनुसार सभी समस्याओं की जड़ अशिक्षा थी। एक अंग्रेज व्यक्ति बेथम की सहायता से उन्होंने कई स्कूलों का निर्माण किया जो बालिकाओं की शिक्षा को ही समर्पित थे। उन्होंने बहुपत्नी प्रथा तथा बाल विवाह का पुरजोर विरोध किया। यह उनकी ही सक्रियता का परिणाम था कि विधवा पुनर्विवाह कानून 1856 में पारित हो गया जिसने सभी विधवा विवाहों को वैध करार दिया। उन्होंने ऐसे कई विवाह करवाए। उन्होंने इसका एक व्यक्तिगत उदाहरण भी प्रस्तुत किया जब उनके पुत्र ने एक विधवा से विवाह किया।

रामकृष्ण मिशन

19 वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में बंगाल में एक और प्रसिद्ध सुधार आंदोलन हुआ जो कि बहुत जल्द देश के अन्य हिस्सों में फैल गया, वह था रामकृष्ण मिशन। यह आंदोलन एक आस्तिक तथा पुजारी गदाधर चटर्जी उर्फ स्वामी रामकृष्ण परमहंस के नेतृत्व में प्रारंभ हुआ (1836–86), जिन्होंने आंतरिक शांति सन् 1871–72 में प्राप्त की थी। उन्होंने सभी धर्मों की एकता तथा हिन्दू धर्म के विश्वासों और रीति रिवाजों के पालन पर जोर दिया। उसके मुख्य शिष्यों में थे नरेन्द्रनाथ उर्फ स्वामी विवेकानंद जिन्होंने रामकृष्ण को अपने गुरू के रूप में स्वीकार किया था। उन्होंने सन् 1893–97 के अपने अमेरिका तथा यूरोपीय दौरों के दौरान आध्यात्मिक हिंदूवाद का संदेश प्रसारित किया। उन्होंने सन् 1897 में रामकृष्ण मिशन की स्थापना की तथा बेलूर मठ का निर्माण किया। वे 1902 में चालीस वर्ष की अल्पायु में ही स्वर्ग सिधार गए। विवेकानंद धर्म की अवगति के, विविध वर्गों के, जाति व्यवस्था के, अस्पृश्यता के तथा अंधविश्वास इत्यादि के घोर विरोधी थे। उन्होंने जोर देकर कहा कि हिन्दुओं की यह हालत उनके द्वारा अपने इतिहास के प्रति अज्ञानता के कारण है। उन्होंने हिन्दुओं की आध्यात्मिक सर्वोच्चता को पश्चिम के स्वार्थी समाज से श्रेष्ठ सिद्ध किया। हालांकि उनका मानना था कि भारतीयों को पश्चिम से कार्य नीतियाँ, संगठन के स्वरुप तथा तकनीकी विस्तार सीखना चाहिए।

पश्चिमी भारत में सुधार आंदोलन

19 वी शदी में ही भारत के पश्चिमी हिस्सों में भी कई सुधारवादी आंदोलन प्रारंभ हुए। सुधारवादी जैसे के.टी.तेलंग, वी.एन.मांडलिक, तथा आर.जी.भंडारकर ने भारत के अतीत को गौरवान्वित किया। उनमें से कईयों ने सामाजिक बुराइयों, जैसे जाति व्यवस्था पर प्रहार कर विधवा विवाह को प्रोत्साहित किया जैसे कि करसोनदास मुलजी तथा दबोदा पडुरंग। उन्होंने सन् 1844 में **मानव धर्म सभा** तथा 1849 में **परमहंस मंडली** की स्थापना की। मंडली ने गुप्त रूप से गतिविधियों का संचालन किया। उनके सदस्यों ने शपथ ली कि वे जातिगत भेदभाव का पुरजोर विरोध करेंगे। मंडली का पतन 1860 के उपरांत हो गया जब इसके सदस्यों ने अपनी गोपनीयता खो दी। केशब चन्द्र सेन की बम्बई की दो यात्राओं 1864 तथा 1867 ने इस हिस्से में सामाजिक सुधारों पर प्रभाव डाला। उनकी यात्राओं के प्रत्यक्ष प्रभाव के परिणाम स्वरूप आत्माराम पांडुरंग द्वारा 1867 में प्रार्थना समाज का गठन हुआ। दक्कन शिक्षा समाज का संचालन करने वाले महादेव गोविन्द रानाडे इस संस्थान के पीछे मुख्य शक्ति थे। प्रार्थना समाज के सदस्य पहले परमहंस मंडली के कार्यकर्ता रह चुके थे। समाज ने मूर्तिपूजा, पुजारी के वर्चस्व, जाति भेदभाव का विरोध किया तथा एकेश्वरवाद का समर्थन किया। हिन्दुओं के

आपकी टिप्पणियाँ

अतिरिक्त इन्होंने ईसाइयत तथा बौद्ध धर्म की ओर भी देखा। उन्होंने सभी धर्मों में सत्य को ढूँढा। मध्यकालीन मराठा भक्ति सतों से प्रेरणा लेकर रानाडे ने एक ईश्वर– के सिद्धांत को स्थापित करने का प्रयत्न किया।

आर्य समाज

19वीं शताब्दी के अंत में सबसे प्रसिद्ध सुधार आंदोलन आर्य समाज रहा। यह पश्चिम भारत से प्रारंभ हुआ तथा पंजाब तथा अन्य हिन्दी भाषी क्षेत्रों में बहुत जल्दी फैल गया। इसकी स्थापना दयानंद सरस्वती (1824–83) ने की। सन् 1875 में उन्होंने 'सत्यार्थ प्रकाश' की रचना की तथा इसी वर्ष बम्बई आर्य समाज का गठन किया। लाहौर आर्य समाज 1877 में स्थापित हुआ। परिणामस्वरूप लाहौर आर्य समाज की गतिविधियों का मुख्य केन्द्र बन गया। दयानंद ने हिन्दू धर्म के आडंबरों का विरोध किया था वेदों पर अपनी शिक्षाएँ आधारित कीं। उनके अनुसार सही विश्लेषण के साथ वेद ही आखिरी सत्य हैं। उन्होंने पुराणों, बहु–ईश्वरवाद, मूर्तिपूजा तथा ब्राहमणों के वर्चस्व का विरोध किया। उन्होंने जनसाधारण तक पहुंचने के लिए हिन्दी भाषा को अपनाया। उन्होंने बाल विवाह का भी विरोध किया। वे जातिगत भेदभाव के घोर विरोधी थे क्योंकि उनके अनुसार निम्न जाति के लोगों द्वारा ईसाई तथा मुस्लिम धर्मान्तरण की सबसे बड़ी वजह यही थी।

दयानंद सरस्वती की मृत्यु (1883) के पश्चात् आर्य समाज बिखर गया। समाज को संघठित रखने तथा इसकी गतिविधियों को संघटित रखने के प्रयास के चलते दयानंद एंग्लो वैदिक ट्रस्ट तथा मैनेजमेंट सोसायटी की स्थापना लाहौर में 1886 में की गई। इसी वर्ष इस समिति ने स्कूल खोला, जिसमें लाला हंसराज प्रधानाध्यापक बने। हालांकि समाज के कुछ सदस्यों ने एंग्लो वैदिक शिक्षा का विरोध किया था। वे थे मुंशी राम (स्वामी श्रद्धानंद), गुरूदत्त, लेखराम तथा अन्य। उन्होंने तर्क दिया कि आर्य समाज की शैक्षणिक गतिविधियाँ संस्कृत आर्य विचारधारा तथा वैदिक शिक्षाओं पर आधारित होनी चाहिए तथा ब्रिटिश भाषा को कम से कम स्थान देना चाहिए। विरोध करने वालों का मानना था कि दयानंद के कथन ही पवित्र हैं तथा सत्यार्थ प्रकाश में दिए उनके संदेशों पर प्रश्न नहीं किया जा सकता। जबकि लाला हंसराज तथा लाजपत राय ने इस बात पर जोर दिया कि दयानंद एक सुधारक थे न कि कोई ऋषि या साधु। डी ए. वी. प्रबंध समिति के नियंत्रण पर भी विवाद उठे। इन मतभेदों के चलते सन् 1893 में आर्य समाज का औपचारिक विभाजन हो गया जहाँ मुंशीराम ने अपने समर्थकों के साथ गुरूकुल आधारित शिक्षा की शुरुआत की। तत्पश्चात् 1893 के बाद आर्य समाज के दो हिस्से हो गए–डी. ए. वी. समूह तथा गुरुकुल समूह।

मुंशी राम तथा लेख राम ने स्वयं को वेद शिक्षा के प्रचार– प्रसार के लिए समर्पित कर दिया। तथा मिशनरियों के प्रभाव से शिक्षा को बचाने के लिए जालंधर में आर्यकन्या पाठशाला का निर्माण किया। सन् 1902 में मुंशीराम ने हरिद्वार में कांगड़ी में एक गुरूकुल की नींव रखी। यह संस्थान भारत में आर्य समाज की शिक्षा शाखा का केन्द्र बन गया। यहीं पर मुंशीराम ने संन्यास लिया तथा स्वामी श्रद्धानंद बन गए। आर्य समाज की दोनों शाखाएँ अर्थात् डी. ए. वी. तथा गुरूकुल शिक्षा के मुद्दे पर तो अलग–अलग मतों वाली थीं किंतु महत्त्वपूर्ण सामाजिक, राजनीतिक तथा सामाजिक मुद्दों पर एक थीं। पूर्ण रूप से आर्य समाज ने हिन्दुओं के ईसाई तथा इस्लाम में धर्मान्तरण को पूर्ण रूप से गलत

आपकी टिप्पणियाँ

ठहराया तथा धर्मान्तरित हुए हिन्दुओं की पुनः स्वधर्म में वापसी करवाई। इस प्रक्रिया को शुद्धि कहा गया। उन्होंने देवनागरी लिपि में लिखी हिन्दी भाषा के प्रयोग पर बल दिया। सन् 1980 में आर्य समाज ने गौ वध के मुद्दे को उठाया तथा गौरक्षिणी सभा की नींव डाली। आर्य समाज ने छूआछूत के खिलाफ आंदोलन किया तथा जाति भेद की समाप्ति पर जोर दिया।

मुस्लिमों में सुधार आंदोलन

मुस्लिमों के शिक्षित एवं संभ्रांत वर्ग में सत्ता खोने की पीड़ा थी। इसके पीछे मुख्य वजहें थीं–मुगलों से अंग्रेजों को सत्ता का हस्तांतरण तथा फारसी की बजाय अंग्रेजी का रोजगार एवं दफ्तर की भाषा बन जाना। 19वीं शताब्दी के प्रारंभ में बंगाल में किसानों द्वारा प्रारंभ किए सुधारवादी आंदोलन फराजिस में विशुद्ध इस्लाम पर लौटने पर बल दिया। उन्होंने दिल्ली के शाह बलियतुल्लाह (1703–63) की शिक्षाओं का अनुसरण किया जिन्होंने लगभग एक शताब्दी पूर्व इस्लाम की शुद्धता को पुनः पाने पर बल दिया था तथा मुस्लिमों के बीच बढ़ रही गैर मुस्लिम परम्पराओं का विरोध किया था। फराजिस के संस्थापक शरीयत उल्ला (1781–1839) ने शुद्धिकरण की शिक्षाएँ दी तथा फैरज की ओर लौटने को कहा जैसे–कलीम अर्थात इस्लाम के आवश्यक कर्तव्य, सलत (नमाज), सॉन (रोजा), जकात (गरीबों को मदद) तथा हज। उन्होंने एक ही खुदा अर्थात् तौहीद के विचार को बढ़ावा दिया। अन्य आंदोलन जो मुसलमानों के बीच हुआ, वह था **तारीख-ए-मुहमदिया** जो कि टीटू मीर के नेतृत्व में हुआ तथा सैय्यद अहमद बरेलवी के नेतृत्व में आगे बढ़ा। इस आंदोलन ने भी अतीत की शुद्धि पर लौटने पर जोर दिया। एक अन्य आंदोलन उलेमा वर्ग (मुस्लिम धर्माधिकारी) की शक्ति के पतन को लेकर संयुक्त क्षेत्र के देवबंद में प्रारंभ हुआ।

इस्लामी विचारों की दिल्ली शाखा दिल्ली कॉलेज (वर्तमान में जाकिर हुसैन कॉलेज) से प्रारंभ हुई जिसने एक समांनांतर शिक्षा की शुरुआत की –इस्लामी तथा ब्रिटिश। सन् 1830 के शुरु में कॉलेज ने मुस्लिमों में शिक्षा के प्रति आधुनिक चेतना का विस्तार किया। हालाँकि 1857 के विद्रोह तथा परिणामस्वरूप ब्रिटिश सेनाओं के दमन ने इस बौद्धिक उत्साह को दबा दिया। किंतु आधुनिकीकरण की इच्छा एक वर्ग के भीतर तीव्र रूप से बनी रही।

सैय्यद अहमद खान (1817–1898) के नेतृत्व में मुस्लिमों को नई दिशा मिली जिनके अनुसार आधुनिक शिक्षा भारतीय मुस्लिमों की स्थिति में सुधार के लिए आवश्यक थी। उन्होंने यूरोपीय विज्ञान तथा तकनीकी शिक्षा पर जोर दिया। सन् 1866 में उन्होंने ब्रिटिश इंडियन एसोसिएशन की नींव डाली। वे सन् 1869–1870 के दौरान एक वर्ष तक इंग्लैंड में रहे। वहाँ से वापस आकर उन्होंने अपने मुस्लिम समुदाय से अंग्रेज समाज की कुछ सकारात्मक विशेषताओं को अपनाने की सलाह दी, जैसे अनुशासन, क्रमबद्धता, कुशलता तथा शिक्षा का उच्च स्तर। उन्होंने संकेत दिया कि कुरान तथा प्राकृतिक विज्ञान में कोई भी मूलभूत अन्तर नहीं है। उन्होंने सन् 1875 में अलीगढ़ में मुहम्मद एंग्लो ओरिएंटल कॉलेज की स्थापना की जो मुसलमानों के लिए आधुनिक शिक्षा का मुख्य केन्द्र बन गया। विद्यार्थी प्रारंभिक स्तर पर सरकार द्वारा निर्धारित पाठ्यक्रम का अनुसरण करते थे तथा माहौल इस्लामी होता था। सन् 1878 में महाविद्यालय में

कक्षाएँ प्रारम्भ हुई तथा गैर मुस्लिमों ने भी नामांकन कराया। सन् 1886 में सैय्यद अहमद खान ने मुहम्मद एंग्लो ओरिएंटल शैक्षणिक सम्मेलन की नींव डाली। अलीगढ़ के मुस्लिम स्नातकों ने, जो कि 1882–1902 के दौरान 220 की संख्या में थे, मुस्लिम बुद्धिजीवियों को प्रभावित किया तथा समाज को साथ एक योग्य तथा आधुनिक नेतृत्व प्रदान किया।

सुधार आंदोलनों के प्रभाव

19वीं शताब्दी में हुए सुधार आंदोलनों ने ब्रिटिश साम्राज्यवाद के खिलाफ राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलन की पृष्ठभूमि तैयार की। कुछ महिला आंदोलनकारियों ने भी 19वीं शताब्दी के सामाजिक जीवन में महत्त्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह किया। इनमें मुख्य नाम थे, पश्चिम क्षेत्र में पंडिता रामाबाई, मद्रास में सिस्टर सुब्बालक्ष्मी एवं बंगाल में रोकया सखावत हुसैन। सुधार आंदोलनों ने आधुनिक मध्यवर्ग को जन्म दिया जो अपने अधिकारों के प्रति सजग था। कुछ आंदोलनकारियों ने ऐसे ब्रिटिश कानूनों का विरोध किया जो उनके अनुसार धर्म में दखलंदाजी करने वाले थे। शादी की आयु 10 से बढ़ा कर 12 किए जाने के मामले से यह स्पष्टतः दिखाई देता है। हमें यह भी प्रतीत होता है कि इन सुधार आंदोलनों ने कुछ ऐसे भी मुद्दे उठाए जो कि अन्य सम्प्रदायों के हित के खिलाफ थे तथा आगे चलकर जिन्होंने सम्प्रदायिकता को हवा दी।

पाठगत प्रश्न 18.2

1. राममोहन राय द्वारा उठाए गए मुख्य मुद्दों को विस्तार से लिखिए।

2. देवेन्द्रनाथ टैगोर तथा केशव चन्द्र सेन के मध्य विवाद के स्वरूप पर प्रकाश डालिए।

3. आर्य समाज विभाजित क्यों हुआ? इसकी भिन्न–भिन्न शाखाओं के नेता कौन थे?

4. फराजी आंदोलन ने किस मुद्दे पर जोर दिया?

5. मुस्लिम समुदाय को आधुनिक बनाने में सैय्यद अहमद खान की भूमिका की समीक्षा कीजिए।

18.3 भारत में पश्चिमी शिक्षा का उदय

ब्रिटिश शासक भारत में अपनी विचारधारा तथा शिक्षा के प्रचार को लेकर बहुत ही उत्सुक थे। यह देश में उनकी जड़ों को मजबूत कर सकता था। इसके अतिरिक्त इसकी वजह से भारत में ब्रिटिश शासन के स्वामिभक्त वर्ग का उदय भी हो सकता था। ब्रिटिश शिक्षा इस उद्देश्य की प्राप्ति का सबसे महत्त्वपूर्ण माध्यम थी। 19 से 20 वीं शताब्दी के दौरान ब्रिटिश शिक्षा को लोकप्रिय बनाने के लिए अनेक प्रयास किए गए तथा तदनुसार

आपकी टिप्पणियाँ

आधारभूत ढांचे बनाए गए। आरंभ में वारेन हेस्टिंग्स, कार्नवालिस, विलियम जोन्स, जोनाथन डंकन तथा अन्य प्राच्यविद प्रशासकों एवं विद्वानों ने भारतीय प्राचीन शिक्षा को ही प्रमुखता दी। किंतु शनैः शनै : उनके विचार अपना महत्त्व खोते चले गए। यह माना गया कि ब्रिटिश साम्राज्य को अपना सांस्कृतिक अभियान भारत में पूर्ण करना है, इसलिए पश्चिमी विज्ञान तथा सभ्यता को लोकप्रिय बनाना होगा।

ब्रिटिश शिक्षा की शुरुआत तथा चार्टर एक्ट 1813

भारत में ब्रिटिश शिक्षा की शुरुआत 18वीं शताब्दी में कुछ चैरिटी स्कूलों द्वारा कलकत्ता, मद्रास तथा मुम्बई में यूरोपीय तथा एंग्लो–इंडियन बच्चों की शिक्षा द्वारा हुई। हालांकि ईस्ट इंडिया कंपनी ने कई तरीकों से इन स्कूलों को सहयोग दिया किंतु भारतीयों को अंग्रेजी पढ़ाने में कोई रुचि नहीं दिखलाई। इसकी शुरुआत अंततः 1813 में चार्टर एक्ट द्वारा हुई। इस एक्ट ने मिशनरियों को पूरे भारत में यात्रा करने की अनुमति दी। उन मिशनरियों का उद्देश्य भारत में पश्चिमी शिक्षा का प्रचार तथा अंग्रेजी के माध्यम से ईसाइयत का प्रचार–प्रसार था। विशेष रूप से, इस एक्ट ने (i) भारतीय शिक्षित वर्ग को प्रोत्साहित करने, साहित्य के विकास तथा (ii) भारतीयों के बीच विज्ञान के प्रचार प्रसार पर कंपनी को वार्षिक एक लाख रुपए खर्च करने को कहा। हालाँकि इस एक्ट की व्याख्या अलग–अलग लोगों ने भिन्न–भिन्न रूपों में की।

शिक्षा के माध्यम तथा मैकाले की भूमिका पर बहस

भारत में जिस शिक्षा पर कंपनी पैसा खर्च कर रही थी, उसके माध्यम को लेकर बहसें प्रारंभ हो गईं। प्राचीन विद्वानों तथा ब्रिटिश व्यवस्था के समर्थकों के बीच तमाम बहसें हुईं। अंग्रेजी शिक्षा के पक्ष में माहौल तब बनना प्रारंभ हुआ जब बेनटिंक ने गर्वनर जनरल का पदभार सँभाला (1828)। सन् 1834 में टी. बी. मैकाले उसकी सलाहकार समिति में कानूनी सदस्य के रूप में सम्मिलित हुआ। मैकॉले अंग्रेजी शिक्षा का महान पक्षधर था। वह जन निर्देशों की सामान्य समिति का अध्यक्ष बनाया गया। ब्रिटिश आधारित शिक्षा के समर्थक अथवा ब्रिटिश विद, मैकॉले के नेतृत्व में विजयी सिद्ध हुए। मैकाले ने भारतीय शिक्षा पर अपना प्रपत्र फरवरी, सन् 1835 में जारी किया। यह संदेश भारत में अंग्रेजी शिक्षा का पथप्रदर्शक सिद्धांत बन गया। सरकार ने संकल्प लिया कि भविष्य में अंग्रेजी भाषा के माध्यम से यूरोपीय साहित्य तथा विज्ञान का प्रचार–प्रसार उसका उद्देश्य होगा। भविष्य में कंपनी द्वारा खर्च किया गया कोष इसी उद्देश्य के लिए प्रयुक्त होगा। इस कदम का अर्थ यह हुआ कि अब भारत में अंग्रेजी शिक्षा पश्चिमी ज्ञान का एक महत्त्वपूर्ण माध्यम बन गई थी।

मैकॉले का स्पष्ट मानना था कि भारत में अंग्रेजी शिक्षा एक ऐसे वर्ग का निर्माण करेगी जो कि 'शक्ल सूरत से तो पूरी तरह भारतीय होगा किंतु स्वभाव में अंग्रेज'। यह उम्मीद जताई गई कि यह वर्ग भारत में ब्रिटिश राज का सुदृढ़ स्तंभ बनेगा। यह समझा गया कि अंग्रेजी माध्यम से प्रशिक्षित ये भारतीय पश्चिमी नीतियाँ तथा नैतिकता सीखेंगे जब औपनिवेशिक ढांचे के साथ जुड़ने की बात आएगी तो ये भारतीय भारत में ब्रिटिश शासन को मजबूत करेंगे। यह डाउनवार्ड फिल्ट्रशन सिद्धांत था। यह शिक्षा जन सामान्य के लिए न होकर पढ़े लिखे तथा कुलीन वर्ग के लिए थी। इस सिद्धान्त के अनुसार यह माना गया कि इन कुलीन भारतीयों के माध्यम से अंग्रेजी शिक्षा नीति जन साधारण में फैलेगी। इन प्रशिक्षित भारतीयों ने जब शिक्षकों का कार्य किया तो क्षेत्रीय भाषाओं में प्राथमिक शिक्षा

का स्वतः ह्रास होने लगा। मैकॉले को यकीन था कि सीमित कोष से वह जन साधारण को ब्रिटिश में शिक्षित नहीं कर पाएगा। इससे बेहतर यह था कि ये मुट्ठी भर भारतीय अंग्रेज भाषांतरकारों का काम करते। यह वर्ग स्थानीय भाषा तथा साहित्य को समृद्ध कर पश्चिमी विज्ञान तथा साहित्य को जन–जन तक पहुंचाने में मदद करेगा। यह ब्रिटिश शासकों को बहुत ही कम खर्च पर पश्चिमी सभ्यता को जन–जन तक फैलाने में मदद की। इस सिद्धांत ने ब्रिटिश अफसरशाही में भारतीयों को अधीनस्थ पदों जैसे कि क्लर्क आदि बनने के योग्य बनाया।

वुड्स डिस्पैच/वुड योजना

19वीं शताब्दी में भारत में शिक्षा, विशेषकर अंग्रेजी शिक्षा के विकास का सबसे महत्त्वपूर्ण हिस्सा था राज्य सचिव चार्ल्स वुड द्वारा तैयार किया गया दिशा–निर्देश। यह सन् 1854 में जारी किया गया तथा वुड घोषणा पत्र के नाम से जाना गया। इस विस्तृत योजना ने 19 वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में शिक्षा व्यवस्था को प्रभावित किया। इसने यूरोपीय शिक्षा को भारतीय नक्शे पर पूर्णतः स्थापित कर दिया।

इसकी मुख्य विशेषताएँ थीं

1. इसने भारत में शिक्षा का उद्देश्य यूरोपीय ज्ञान के प्रसार को माना।
2. उच्च शिक्षा के लिए माध्यम अंग्रेजी ही रहेगी तथा स्थानीय भाषाएँ ऐसी माध्यम होंगी जिनके द्वारा यूरोपीय ज्ञान जन सामान्य तक पहुँच सके।
3. इसने स्कूलों में कुछ श्रेणियों का प्रस्ताव दिया। यथा, देशी भाषा की प्राथमिक पाठशालाएँ गांव के स्तर पर, उसके बाद माध्यमिक स्तर पर एंग्लो देशभाषा के उच्च विद्यालय तथा जिला स्तर पर संबद्ध महाविद्यालय।
4. इस घोषणा पत्र ने पहली बार शिक्षा क्षेत्र में निजी प्रयासों को प्रोत्साहित करने हेतु सरकारी अनुदान की सिफारिश की।
5. इसने ब्रिटिश शासन के अधीनस्थ सभी पाँच क्षेत्रों में एक निदेशक के नेतृत्व में जन निर्देश विभाग की स्थापना का भी प्रस्ताव दिया। इस विभाग का उद्देश्य क्षेत्र विशेष में शिक्षा की प्रगति की समीक्षा करना था। जन निर्देश विभाग की स्थापना सन् 1855 में हुई तथा इसने जन निर्देश समिति एवं शिक्षा परिषद् (कमिटी ऑफ पब्लिक इंस्ट्रक्शन एंड काउंसिल ऑफ एजुकेशन) का स्थान ले लिया।
6. इसने कलकत्ता, मुम्बई तथा मद्रास में लंदन विश्व – विद्यालय की तर्ज पर विश्वविद्यालय स्थापित करने का प्रस्ताव भी दिया जो कि परीक्षाओं का आयोजन करता तथा उपाधि देता। सन् 1857 में कलकत्ता, बम्बई तथा मद्रास में विश्वविद्यालयों की स्थापना हुई।
7. औपचारिक शिक्षा के अतिरिक्त इस घोषणा पत्र ने व्यावसायिक शिक्षा के महत्त्व पर भी बल दिया तथा तकनीकी स्कूल और महाविद्यालयों की स्थापना की भी वकालत की।
8. इसने भावी शिक्षकों हेतु प्रशिक्षण संस्थानों का भी प्रस्ताव रखा।
9. इसने महिलाओं के लिए शिक्षा का भी समर्थन किया। परिणाम स्वरुप कई आधुनिक बालिका विद्यालय खोले गए जिन्हें सरकार की तरफ से सहायता भी प्राप्त हुई।

आपकी टिप्पणियाँ

हंटर कमीशन

शिक्षा के क्षेत्र में प्रगति की समीक्षा करने के लिए वुड के घोषणा पत्र के पश्चात् सन् 1882 में डब्ल्यू डब्ल्यू हंटर के नेतृत्व में हंटर कमीशन की स्थापना हुई। यह मुख्यतः प्राथमिक तथा माध्यमिक शिक्षा पर ही केन्द्रित था। हंटर कमीशन ने ढेर सारी संस्तुतियाँ कीं। उसने प्राथमिक शिक्षा पर विशेष बल दिया जिसका नियंत्रण जिला तथा नगरपालिका बोर्ड को स्थानांतरित करने की बात कही गई। माध्यमिक स्तर पर दो संकाय होने चाहिएँ–एक तो साक्षरता शिक्षा जो विश्वविद्यालय शिक्षा का रुख करे तथा दूसरी व्यावसायिक शिक्षा प्रदान करने वाला संकाय। शिक्षा के क्षेत्र में निजी प्रयासों को भी बढ़ावा दिया गया। इसने चुनिंदा शहरों से बाहर निकलकर महिलाओं की शिक्षा व्यवस्था पर विशेष ध्यान देने को कहा। अगले दो दशकों तक हंटर की सिफारिशों का असर चारों ओर दिखाई पड़ा। माध्यमिक तथा प्राथमिक स्तर पर शिक्षा के क्षेत्र में अभूतपूर्व प्रगति हुई। सन् 1882 में पंजाब विश्वविद्यालय तथा सन् 1887 में इलाहाबाद विश्वविद्यालय की स्थापना हुई।

पाठगत प्रश्न 18.3

1. किस एक्ट ने ईस्ट इंडिया कंपनी को शिक्षा पर सालाना एक लाख रुपए खर्च करने का निर्देश दिया।

2. भारत में ब्रिटिश शिक्षा का जबरदस्त समर्थक कौन थ?
   (क) जोनाथन डंकन
   (ख) टी बी मैकाले
   (ग) वारेन हेस्टिंग्स
   (घ) विलियम जोन्स

3. मैकॉले द्वारा भारत में ब्रिटिश शिक्षा के विस्तार के उद्देश्य को संक्षेप में समझाइए।

4. भारत में शिक्षा नीति के निर्देशन में वुड के घोषणा–पत्र की महत्ता को रेखांकित कीजिए।

5. हंटर कमीशन किससे संबंधित था?

18.4 भारत में पत्रकारिता का विकास

प्रेस तथा पत्रकारिता के उदय ने आधुनिक युग के दौरान एक नई चेतना को जन्म दिया। छपाई तकनीक के विस्तार ने पुस्तकों को आसानी से उपलब्ध कराया।

दूसरे शब्दों में, छपाई ने भारत में संवाद के मार्ग खोले। छपाई की नई तकनीक ने पत्रकारिता तथा प्रेस की प्रगति में अहम भूमिका निभाई। 18वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में अंग्रेजी भाषा में समाचार पत्र का प्रकाशन आरंभ हो गया। 19वीं शताब्दी के दौरान स्थानीय भाषाओं में भी कई पत्रिकाओं का प्रकाशन प्रारंभ हो गया। जेम्स ऑगस्टस हिक्की ने सन् 1780 में बंगाल गजट के नाम से भारत में पहला समाचार पत्र प्रकाशित किया। इसके पश्चात् बंगाल, मुम्बई तथा मद्रास से समाचार पत्रो की श्रृंखला आरंभ हो गई। कुछ मुख्य समाचार पत्र थे–कलकत्ता क्रोनिकल (1786) मद्रास कुरियर (1788) तथा बाम्बे हेराल्ड (1789)।

ब्रिटिश के आरंभिक समाचार पत्र भारत में रह रहे यूरोपीय तथा एंग्लो इंडियन समुदाय के लिए प्रकाशित होने थे। हालांकि कंपनी के अधिकारी अपने द्वारा किए जा रहे दुष्कृत्यों के समाचारों से चिंतित थे, अतः तमाम तरह के प्रतिबंध लागू किये गए। लॉर्ड वेलेस्ली (1796–1804) ने 1799 में सेंसरशिप ऑफ प्रेस एक्ट के जरिए कड़े प्रतिबंध लगाए। इस अधिनियम में चेतावनी दी गई। कि सभी सूचनाएँ सरकार के सचिव द्वारा अनुमोदित होनी चाहिए। प्रकाशक, संपादक तथा मालिक का नाम हर अंक में उल्लिखित होना चाहिए। लॉर्ड हेस्टिंग्स (1813–23) ने 1818 ई. में इनमें से कुछ नियमों में ढील दी तथा प्रेस से प्री–सेंसरशिप हटा ली। हालांकि, यह ढील अस्थायी ही सिद्ध हुई क्योंकि 1823 में कार्यवाहक गवर्नर जनरल का पद संभालने वाले जॉन एडम्स ने इसी वर्ष कुछ और कड़े नियम प्रेस पर थोप दिये। किसी प्रेस का संचालन करने एवं प्रयोग करने के लिए लाइसेंस का होना आवश्यक कर दिया गया। गवर्नर जनरल के पास लाइसेंस निरस्त करने का अधिकार था।

बाद के गवर्नर जनरल चार्ल्स मेटेकैफे (1835–1836) स्वतंत्र प्रेस के पक्षधर थे। उन्होंने 1823 के नियमों को निरस्त कर दिया गया। मेटकैफे प्रेस अधिनियम चाहता था कि प्रकाशक केवल अपने नाम तथा प्रकाशन के स्थान एवं परिसर की घोषणा कर दे। इस उदारवादी कदम ने प्रेस की प्रगति पर सकारात्मक प्रभाव डाला तथा 1857 तक जब तक कि विद्रोह के चलते पुनः कड़े नियम नहीं लगाये गए बड़ी संख्या मे समाचार पत्र प्रकाशित हुए। भारतीय भाषाओं के समाचार पत्र पर सबसे कठोर प्रतिबंध लॉर्ड लिटन का वर्नाकुलर प्रेस एक्ट 1878 का था। एक अत्यन्त ही रंगभेदी तथा भेदभाव वाले इस अधिनियम ने सरकार के खिलाफ भारतीय भाषाओं की अभिव्यक्ति का गला घोंटने का प्रयास किया। ये प्रतिबंध ब्रिटिश समाचार पत्रों पर लागू नहीं हुए। यह लिटन की रूढ़िवादी तथा घमंडी सोच का परिचायक था। इसने सरकार को अप्रत्यक्ष रूप से भारतीय बुद्धिजीवियों की लेखनी पर नियंत्रण का अधिकार दे दिया। जिलाधिकारी के विरूद्ध अपील करने का प्रावधान नहीं था। इस अधिनियम को सन् 1882 में लॉर्ड रिपन द्वारा बदल दिया गया जो अपने उदारवादी दृष्टिकोण की वजह से भारतीय जनता में बहुत लोकप्रिय था।

पाठगत प्रश्न 18.4

1. भारत का पहला समाचार पत्र कौन–सा था और यह कब प्रकाशित हुआ था?

आपकी टिप्पणियाँ

2. समाचार पत्रों को प्रगति में प्रिंटिंग प्रेस की महत्ता को रेखांकित कीजिए।

3. सेंसरशिप ऑफ प्रेस एक्ट 1799 के जरिए कौन से प्रतिबंध लागू किए गए?

4. चार्ल्स मेटेकैफे ने क्या सकारात्मक बदलाव किए?

5. वर्नाक्युलर प्रेस एक्ट 1878 क्या था?

आपने क्या सीखा

आपने पढ़ा कि भारत के प्रति ब्रिटिश शासकों का रुख सर्वथा भिन्न था। उनके द्वारा बनाई गई नीतियाँ उनके वैचारिक झुकाव को ही दर्शाती हैं 19वीं शताब्दी के दौरान सुधार आंदोलनों की कड़ियों ने भारत को झकझोर दिया। इन आंदोलनों ने अन्य मुद्दों यथा, महिलाओं की स्थिति, जातिगत भेदभाव, धार्मिक कुरीतियाँ, समाजों का आधुनिकीकरण तथा शिक्षा के पिछड़ेपन को भी संबोधित किया। ब्रिटिश नीति निर्माताओं ने ब्रिटिश शिक्षा को लोकप्रिय बनाने का भी प्रयत्न किया। जिसके परिणामस्वरूप देश पर उनका नियंत्रण और मजबूत हुआ। इस अवधि के दौरान भारतीय तथा ब्रिटिश दोनों ही समाचार पत्र फले–फूले। हालांकि प्रतिबंधों ने प्रेस की स्वतंत्रता को प्रभावित अवश्य किया। इस अवधि के दौरान हुए सामाजिक परिवर्तनों ने अंततः ब्रिटिश शासन के खिलाफ स्वतंत्रता आंदोलन की नींव डाली।

पाठांत प्रश्न

1. भारत में ब्रिटिश नीतियों के निर्धारण में विचार धाराएं आवश्यक क्यों थी?
2. भारत के अतीत की लोकप्रियता में प्राच्यविदों का क्या योगदान था?
3. 19वीं शताब्दी में हिन्दू समाज में कौन–कौन सी कुरीतियाँ व्याप्त थी?
4. इस अवधि के दौरान हुए सुधार आंदोलनों में महिलाओं से संबंधित मुद्दे कितने आवश्यक थे?
5. पूर्वी एवं पश्चिमी सभ्यताओं के प्रति विवेकानंद के क्या विचार थे?
6. आर्य समाज द्वारा उठाए गए महत्त्वपूर्ण मुद्दे कौन–कौन से थे?
7. 19वीं शताब्दी में मुस्लिम समुदाय में हुए महत्त्वपूर्ण सुधारवादी आंदोलनो की समीक्षा कीजिए। उनके द्वारा कौन–कौन से मुद्दे उठाए गए?
8. भारत में ब्रिटिश शिक्षा के विस्तार पर मैकॉले के विचारों पर प्रकाश डालिए।

आपकी टिप्पणियाँ

9. डाउनवार्ड फिल्ट्रेशन का सिद्धांत क्या था?

10. वर्नाक्युलर प्रेस एक्ट 1878 में क्या कमियाँ थी?

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

18.1

1. कोलकाता मदरसा (1781), एशियायिक सोसायटी ऑफ बंगाल (1789) तथा बनारस में संस्कृत महाविद्यालय (1794)
2. एशियाटिक सोसायटी ने संस्कृत के महत्त्वपूर्ण ग्रंथों के अनुवाद किए।
3. लॉर्ड वैलेजली
4. इंग्लैंड
5. 1813 ई. का चार्टर एक्ट

18.2

1. स्त्री शिक्षा का अभाव, बहुपत्नीवाद तथा सती प्रथा जैसे मुद्दे। देखें 18.2 अनुच्छेद 3।
2. केशव चंद्र सेन देवेन्द्रनाथ टैगोर की तुलना में सामाजिक संदर्भ अधिक सुधारवादी थे। देखें 18.3 अनुच्छेद–5
3. 1893; डी ए वी विभाग : लाला हंसराज; लाला लाजपत राय; गुरूकुल विभाग; मुंशीराम (स्वामी श्रद्धानंद) लेखराम तथा गुरूदत
4. धार्मिक शुद्धिकरण तथा फैराज अर्थात् इस्लाम के मूल कर्तव्यों की ओर वापसी।
5. उन्होंने भारत में मुस्लिम संप्रदाय के लिए आधुनिक शिक्षा पर जोर दिया। इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए उन्होंने अलीगढ़ में मुस्लिम एंग्लो ओरिएंटल कॉलेज की स्थापना की। देखे 18.2 अनुच्छेद 4

18.3

1. सन् 18.13 ई. का चार्टर एक्ट
2. टी बी मैकाले
3. उसके मुताबिक अंग्रेजी शिक्षा के विस्तार से ऐसे वर्ग का उदय होगा जो ब्रिटिश शासन का समर्थन करेगा। देखें 18.3 अनुच्छेद 4
4. यह घोषणा पत्र की एक विस्तृत योजना था जो यूरोपीय मॉडल पर आधारित था, जिसने भारत की शिक्षा नीति को 50 वर्षों तक निर्देशित किया। देखें 18.3 अनुच्छेद 5
5. यह वुड के घोषणा पत्र के पश्चात् हुई शिक्षा में प्रगति से संबंधित था तथा मुख्यतः प्रारंभिक तथा माध्यमिक शिक्षा से संबंधित था। देखें 18.3 अनुच्छेद 6

18.4

1. बंगाल गजट– 1780
2. छपाई तकनीक के व्यापक प्रयोग ने समाचार पत्रों की प्रगति तथा बड़ी मात्रा में किताबों के प्रकाशन को बढ़ावा दिया। देखें 18.4 अनुच्छेद।
3. पूरी सामग्री सरकार के सचिव द्वारा अनुमोदित होनी चाहिए थी। प्रकाशक के नाम के अतिरिक्त हर अंक में संपादक तथा मालिक के नाम का उल्लेख भी अनिवार्य था।
4. उसने 1823 में प्रेस पर लगे नियमों मे ढील दी। अब प्रकाशकों के लिए मात्र अपना नाम तथा प्रकाशन स्थान पता देना अनिवार्य था। देखें 18.4 अनुच्छेद–3
5. 1878 के वर्नाक्युलर प्रेस एक्ट ने भारतीय भाषाओं की पत्र–पत्रिकाओं पर पाबंदी लगाई।

पाठान्त प्रश्नों के संकेत

1. 18.1 – प्रशासन एवं आर्थिक नीतियों से संबंधित विचारों के प्रभाव के अंतर्गत
2. 18.2 अनुच्छेद 2, 18.2.1 एवं 2.2
3. 18.2.2 तथा 18.2.3
4. 18.2.5 – आर्य समाज के अधीन
5. 18.2.3 रामकृष्ण मिशन के अंतर्गत
6. 18.2.7
7. 18.3 तथा 18.1.1
8. 18.3.2 अनुच्छेद – 1
9. 18.3.2 अनुच्छेद 2
10. 18.4 अनुच्छेद 3

शब्दावली

1. **ओरिएंटलिस्ट -प्राच्यवादी** – अंग्रेज प्रशासकों का वह समूह जिसने भारत के गौरवशाली अतीत को लोकप्रिय बनाया।
2. **व्हिग का राजनीतिक दर्शन** – कार्यपालिका, विधायिका तथा न्याय पालिका सरकार के पृथक अंग होने चाहिए।
3. **बंगाल पुनर्जागरण** – बंगाल के भव्य इतिहास की पुनः खोज तथा भाषा एवं साहित्य का आधुनिकीकरण।
4. **सती प्रथा** – पति की चिता पर पत्नी को जीवित जलाना
5. **बहुपत्नी प्रथा** – एक से अधिक पत्नियाँ रखना

आपकी टिप्पणियाँ

6. ब्रह्मो प्रण	–	देवेन्द्रनाथ द्वारा लिखित। इसमें ब्रह्म समाज के सदस्यों के कर्त्तव्यों तथा दायित्वों का विवरण है।
7. आध्यात्मिक हिन्दूवाद	–	हिन्दू धर्म की आध्यात्मिकता का स्वामी विवेकानंद द्वारा प्रचार
8. मूर्तिपूजा	–	मूर्तियों की पूजा
9. एकेश्वरवाद	–	एक ही ईश्वर में विश्वास रखना।
10. एंग्लोवैदिक शिक्षा	–	आर्य विचारधारा, अंग्रेजी शिक्षा के साथ वैदिक ग्रंथो की शिक्षा पर बल देनेवाली शिक्षा पद्धति।
11. शुद्धि	–	धर्मान्तरण के खिलाफ आर्य समाज द्वारा चलाया गया अभियान। धर्मान्तरित हुए हिन्दुओं को पुनः हिन्दू धर्म में लाना।
12. गौरक्षिणी सभा	–	गायों की रक्षा के लिए समिति
13. फराइज	–	इस्लाम की पवित्रता को कायम रखना तथा गैर इस्लामिक रीति–रिवाजों का इस्लाम में प्रवेश के लिए विरोध करना। हज, नमाज, रोज़ा, जकात तथा विश्वास पर जोर डालना।
14. प्राकृतिक-विज्ञान	–	प्रकृति को समझने का प्रयास
15. चार्टर एक्ट	–	रानी एलिजाबेथ द्वारा दिया गया कंपनी को अधिकार पत्र, व्यापार में विशेषधिकार तथा संबंधित दिशा–निर्देश जिनकी समय–समय पर समीक्षा होती थी।
16. वर्नाक्युलर प्रेस	–	स्थानीय भाषाओं के समाचार पत्र।